श्रावण शुक्ल २, बुधवार, दिनांक-२५-०७-१९७९
गाथा-३०८-३११, प्रवचन-५

समयसार, सर्वविशुद्ध अधिकार। यह अधिकार मोक्ष अधिकार की चूलिका है। चूलिका का अर्थ यह है कि पहले कहा हुआ है, वह भी कहेंगे और नहीं कहा, वह भी विशेष कहेंगे। मोक्ष अधिकार की यह चूलिका है। इसमें स्पष्ट बहुत आया है। कोई प्रश्न करे कि १४वीं गाथा में, ३८वीं गाथा में—उसमें सब आया है। १४वीं गाथा में यह कहा कि अपना भगवान आत्मा अबद्ध है। राग से बन्ध नहीं, कर्म से बन्ध नहीं, एक पर्याय जितना नहीं। यह बात यहाँ आती है। भगवान (आत्मा) अबद्धस्पृष्ट है। अबद्धस्पृष्ट में नास्ति से कथन है। अस्ति से कहो तो मुक्तस्वरूप ही भगवान अन्दर है। द्रव्यस्वरूप... जो द्रव्य-वस्तु है, यह तो मुक्तस्वरूप है। उसे अबद्ध कहकर मुक्तस्वरूप का भी ज्ञान करते हैं, मुक्तस्वरूप की प्रतीति करते हैं, मुक्तस्वरूप का अनुभव करते हैं, वे सारे जैनशासन का अनुभव करते हैं। यह १५वीं गाथा में कहा है। समझ में आया? तो उसमें भी सब आ गया है। १४वीं, ३८वीं...

(गाथा) ७३ में भी यह कहा कि एक समय की पर्याय... पर से तो भगवान भिन्न ही है, राग से भी भिन्न है। अपनी जो धर्म की निर्मल पर्याय, वह स्वद्रव्य के आश्रय से उत्पन्न होती है, वह षट्कारक के परिणमन से उत्पन्न होती है, द्रव्य से भी नहीं। आहाहा! समझ में आया? यहाँ कहा कि अपना आत्मा क्रमसर अपने निर्मल परिणाम से उत्पन्न होता है। वस्तु तो त्रिकाल वस्तु है। त्रिकाल निर्मल शुद्ध बुद्ध चैतन्यघन, शुद्ध बुद्ध सिद्धस्वरूप प्रभु। शुद्ध है, बुद्ध है, ज्ञान का पिण्ड है और 'सिद्ध समान सदा पद मेरो।' आहाहा! उसमें षट्कारक की परिणति जो पर्याय में है, धर्म की, हों! विकार की नहीं, पर की तो नहीं। अपनी पर्याय में धर्म की परिणति—चैतन्य शुद्ध भगवन्त का अनुभव, उसकी प्रतीति, उसका ज्ञान, उसमें लीनता, यह पर्याय अपने षट्कारक से उत्पन्न होती है। आहाहा! समझ में आया?

(गाथा) ७३ में कहा, वही यहाँ कहा। 'अपने परिणामों से उत्पन्न होता है' उसका अर्थ, वो परिणाम भी निर्मल षट्कारक से उत्पन्न होते हैं। आहाहा! सूक्ष्म बात

है भाई! वीतराग का धर्म वीतरागस्वभाव से उत्पन्न होता है। वीतरागस्वभाव(रूप) वो अपना परिणाम है, वह परिणाम कहाँ से उत्पन्न हुआ? कि त्रिकाली वीतरागस्वभाव है, उसके आश्रय से हुआ। समझ में आया? यह तो पहली लाइन के थोड़े शब्द... **जीव क्रमबद्ध ऐसे अपने परिणामों से...** द्रव्य तो द्रव्य है ही, परन्तु उसकी जो निर्मल पर्याय होती है, वह भी क्रमबद्ध अपनी पर्याय के काल में वह पर्याय का जन्मक्षण है। यह पर्याय का उत्पत्ति का काल है। आहाहा! १०२ गाथा, प्रवचनसार।

अपने परिणामों से उत्पन्न होता हुआ... 'परिणामों से उत्पन्न होता हुआ' ऐसा क्यों कहा? कि परिणाम द्रव्य की पर्याय है, इस अपेक्षा से कहा, बाकी 'द्रव्य से उत्पन्न होता है' (ऐसा कहना) यह भी व्यवहार है। समझ में आया? सूक्ष्म बात है, भाई! **अपने परिणामों से उत्पन्न होता हुआ जीव ही है,...** आहाहा! अपने को केवलज्ञान उत्पन्न होता है, वह अपने परिणाम से उत्पन्न होता है। चार घाति (कर्मों) का नाश होता है तो केवलज्ञान उत्पन्न होता है, ऐसी अपेक्षा नहीं। आहाहा! ऐसे दर्शनमोहनीय कर्म एक है, उसका अभाव होता है तो यहाँ सम्यक् की पर्याय होती है, ऐसी अपेक्षा भी नहीं। आहाहा! ऐसे अपने में, आत्म सम्यग्दर्शन शुद्ध चैतन्य आत्मा का साक्षात्कार (अर्थात्) जैसा आत्मा है, ऐसा ज्ञान में आकर, अनुभव में आकर प्रतीति की और फिर उसमें लीनता होती है, वह भी अपने द्रव्य के आश्रय से लीनता होती है। परन्तु यह लीनता भी वास्तव में तो अपने षट्कारक के परिणमन से लीनता उत्पन्न होती है। आहाहा! द्रव्य से उत्पन्न होती है, यह भी एक व्यवहार सम्बन्ध बताना है। आहाहा! बहुत बात सूक्ष्म है। यह बात चार दिन चली थी, आज पाँचवाँ दिन है। यह तो गम्भीरता की बात है। पार नहीं उसका। अमृतचन्द्राचार्य की टीका और कुन्दकुन्दाचार्य के श्लोक। एक-एक श्लोक में गम्भीरता का पार नहीं।

यहाँ दूसरा आया। **इसी प्रकार अजीव भी...** जैसे जीव भी अपनी पर्याय के क्रमकाल में—अपनी उत्पत्ति के काल में—अपने परिणाम से उत्पन्न होता है, ये परिणाम यहाँ निर्मल लेना, मलिन नहीं। क्योंकि द्रव्य में अनन्त गुण होने पर भी, कोई गुण विकृति करे पर्याय में, ऐसा कोई गुण नहीं। आहाहा! ऐसा अनन्त गुण का पिण्ड प्रभु अपनी पर्याय से जो उत्पन्न होता है तो अजीव भी अपनी पर्याय से क्रमसर उत्पन्न होता

है। आहाहा! समझ में आया? यह अँगुली चलती है ऐसे, तो क्रमबद्ध पर्याय में स्वकाल में होने की क्रिया का परिणाम होना था तो हुआ है। आत्मा से हुआ है, आत्मा ने ऐसा किया तो अँगुली चलती है (ऐसा है नहीं)। भगवान की पूजा में स्वाहा... स्वाहा की भाषा की पर्याय अजीव में क्रमसर होनेवाली हुई है। सूक्ष्म बात। आहाहा! यह तुम्हारे पैसेवाले को तो सुनना... करोड़पति दो करोड़ रुपये। मन्दिर बनाया न मन्दिर? आठ लाख खर्चा। आठ लाख में पश्चात... हम वहाँ रहे तब तक (वहीं) रहे तो, स्टील पड़ा थी स्टील, उसमें चालीस लाख उत्पन्न हो गया। मुनाफे में चालीस लाख विशेष। आठ लाख खर्चा और चालीस लाख आये।

मुमुक्षु : अच्छा धन्धा है।

पूज्य गुरुदेवश्री : यह तो अजीव की पर्याय क्रम से आनेवाली थी तो आयी है, उसमें आत्मा को क्या? आहाहा!

यह तो यहाँ कहते हैं, **अजीव भी क्रमबद्ध...** यह पैसे की पर्याय उस समय ये क्षेत्र में आनेवाली थी... उस क्षेत्र में (आनेवाली) थी, उसमें मान ले कि मेरा पैसा है, वह तो मिथ्या(दृष्टि) मूढ़ है। आहाहा! कहो, माणेकचन्दभाई! यह तुम्हारे पैसेवाले को... पैसे की पर्याय, क्रमबद्ध में अजीव की जो पर्याय उस समय में यहाँ क्षेत्रान्तर होनेवाली है, ऐसी होती है। दूसरा प्राणी कहे कि मैंने राग किया, पुरुषार्थ किया तो पैसा कमाया, वह भ्रम अर्थात् अज्ञान है। आहाहा! **अजीव भी...** 'अजीव भी' क्यों कहा? जीव की बात पहले चली है न? तो अजीव भी... आहाहा! रोटी बनती है तो आटे की पर्याय उस समय रोटी (रूप) होनेवाली थी तो हुई है। स्त्री से हुई नहीं, तवा-तावडी से हुई नहीं, अग्नि से हुई नहीं। आहाहा! स्त्री की इच्छा रोटी (बनाने) की थी तो हुई है, ऐसा भी नहीं। गजब बात है। आहा! और वह आटा लेकर उसमें बेलन फिराते हैं, तो बेलन उसको छूता है, ऐसा भी नहीं। बेलन कहते हैं? यह बेलन से रोटी ऐसे चौड़ी होती है, ऐसा है नहीं। इसकी पर्याय क्रमबद्ध में ऐसी होनेवाली थी तो होती है। आहाहा!

मुमुक्षु : देखता है न?

पूज्य गुरुदेवश्री : देखता है, यह तो संयोग से देखता है मूढ़। उसकी पर्याय से देखे तो उसकी पर्याय अपने से हुई है। देखता है संयोग से—बेलने से, अग्नि से। देखनेवाले की दृष्टि में अन्तर है। आहाहा!

मुमुक्षु : दरबार को तो इतना सब रुपया आवे...

पूज्य गुरुदेवश्री : किसके पास रुपया आवे? कहीं रुपया धूल में आवे?

इनके पास तो दो करोड़ रुपये हैं। शान्तिप्रसाद अपने यहाँ आते थे, उसके पास चालीस करोड़। उसमें क्या है? अभी एक वैष्णव सेठ, वहाँ मुम्बई आया था हमारे दर्शन करने को, (उसके पास) पचास करोड़ हैं। यह हमारे चिमनभाई के सेठ। चिमनभाई हैं न? उसके यहाँ नौकरी करते थे। छोड़ दी। वह वैष्णव है और महिलाएँ हैं सब श्वेताम्बर जैन। और लड़का आदि सभी आदमी वैष्णव। यह घर में दो (धर्म)। स्त्री को प्रेम है... वह मनुष्य भी नरम है। थोड़ा सुनने को आये थे। वह वैष्णव है न? (तो पूछा), महाराज! कर्ता है या नहीं? कर्ता है या नहीं? ५० करोड़ रुपये। धूल में क्या है? पचास... पाँच अरब हैं या धूल अरब है।

जड़ की पर्याय उस समय उस क्षेत्र में आने का क्रम था तो आयी है। उसके पुण्य से आयी है, ऐसा कहना ये भी निमित्त का कथन है। पूर्व का पुण्य है, वह तो जड़ की पर्याय है। यह (पुण्य का) परमाणु भिन्न पर्याय है और ये पैसे आते हैं, वह दूसरी पर्याय है। पुण्य से पैसा आया ऐसे कहना, यह भी निमित्त का कथन है। आहाहा! बहुत बात... प्रभु का मार्ग। यहाँ तो प्रभु की भक्ति करते हैं, उसमें आवाज आती है 'स्वाहा', वह जड़ की क्रमबद्धपर्याय में होनेवाली (है तो) होती है। स्तुति करनेवाला ऐसा माने कि मैं यह भाषा करता हूँ, मैं स्तुति करता हूँ... अरर! समझ में आया? यह तो मिथ्यात्व का पोषण है। आहाहा! सेठ नहीं आते बड़े भाई? हरिशचन्द्रभाई। बहुत नरम हैं। वह तो जिनेश्वरप्रसाद सहारनपुर। मैं तो हरिश्चन्द्र जबलपुर कहता था। आहाहा!

यहाँ कहते हैं कि शरीर की पर्याय भी जब जिस क्षेत्र में जाने की योग्यता है, वहाँ क्रमबद्ध होती है। समझ में आया? यह कहते हैं, **अजीव भी क्रमबद्ध अपने परिणामों से... अपने परिणामों से...** ये भी परिणाम उसको कहते हैं। पर्याय की दशा को

यहाँ परिणाम कहते हैं। परिणाम क्यों कहा? कि परि—समस्त प्रकार से, पर्याय के भेद... नियमसार में आया है। १४वीं गाथा में। '**परि समंतात् भेदम् इति गच्छतीति पर्यायः**' ऐसा शब्द है नियमसार १४वीं गाथा। शुरुआत करते हैं न। है यहाँ नियमसार? नियमसार १४वीं गाथा है न? संस्कृत है। '**परि समंतात् भेदम् इति गच्छतीति पर्यायः**' संस्कृत है। पर्याय किसको कहना? पर्याय किसको कहना? परिणाम क्यों कहा? परि—समस्त प्रकार से, नम गया। पर्याय अपने से हुई है। परिणाम... परिणाम... समस्त प्रकार से नमन अर्थात् उत्पन्न होना। यह अपने से (उत्पन्न) हुई है, द्रव्य से नहीं, गुण से नहीं, पर से नहीं। आहाहा! ऐसा यहाँ कहाँ सुनने को मिले? है संस्कृत है। १४वीं गाथा है न? अन्तिम में। '**परि समंतात्।**' परि+याय। पर्याय क्यों कहा? क्रमबद्ध पर्याय—परिणाम क्यों कहा? '**परि समंतात् भेदम् इति गच्छतीति**' पर्यायरूपी भेद उत्पन्न होता है द्रव्य में। '**भेदम् इति गच्छति इति पर्यायः**' अर्थात् जो सर्व तरफ से भेद को प्राप्त हो, वह पर्याय है। समझ में आया?

तो यह परिणाम भी पर्याय है। तो द्रव्य में यह सर्वप्रकार से अपने परिणाम भेद होकर अपने से होता है। पर के कारण से अजीव की पर्याय होती है, (ऐसा है नहीं)। आहाहा! ऐसे कायोत्सर्ग लगाना, मैं ऐसा काउसग्ग... शरीर की पर्याय क्रम में ऐसे होती है तो ऐसा होता है। उससे 'मैंने ऐसा किया', (ऐसा मानना) यह तो उसका अभिमान है।

मुमुक्षु : ....

पूज्य गुरुदेवश्री : कौन लगाते हैं? कोई लगाते नहीं। मानते हैं। अज्ञानी मानते हैं कि हम ऐसे करते हैं। भगवान की स्तुति भी चलती है तो वाणी की पर्याय से चलती है और क्रमसर पर्याय है, उससे चलती है। आहाहा! मन्दिर भी हुआ, प्रतिमा भगवान के ऊपर में... वह भी क्रमसर जड़—अजीव की पर्याय होने के कारण से परिणाम वहाँ हुआ है। उन परमाणु में '**भेदम् इति गच्छति**' उस समय भेदरूप पर्याय की उत्पत्ति है तो क्रमसर उत्पन्न होता है। दूसरा जीव या दूसरा अजीव उसको बनाये, ऐसा तीन काल में होता नहीं। आहाहा!

यहाँ तो थोड़ा... मैंने किया, मैंने किया, हमने किया, ऐसा मैंने किया, ऐसा मैंने किया... यहाँ तो प्रत्येक अजीव की पर्याय व्यवस्थित है। व्यवस्थित का अर्थ व्यवस्था। व्यवस्था का अर्थ विशेष अवस्था। व्यवस्था का अर्थ विशेष अवस्था। सामान्य परमाणु जो द्रव्य है, उसकी विशेष अवस्था को व्यवस्था कहते हैं। तो परमाणु की व्यवस्था द्रव्य में पर्याय से होती है। आहाहा! समझ में आया? यह सूक्ष्म बात है, भाई! अभी तत्त्व की फेरफार बहुत हो गयी है। मान लेते हैं कि हमारे धर्म होता है। भगवान की स्तुति की, भगवान को चावल चढ़ाया, केसर चढ़ाया। अब तो भगवान का अभिषेक करते हैं पंचामृत से। भगवान तो वीतराग हैं। मूर्ति को पंचामृत भी होता नहीं। आहाहा!

ये मूर्ति भी स्थापन हुई है, वह क्रमपर्याय से वहाँ स्थापन हुई है। स्थापन करने का भाववाला था तो क्रम में शुभभाव आनेवाला तो आया। इस शुभभाव से तो... सब क्रम में है। सब क्रम में है। .... भोपाल में थे न? भोपाल में गये थे न? पवैयाजी! भोपाल में पंच कल्याणक था तब आये थे न? ४० हजार मनुष्य थे। व्याख्यान—प्रवचन में ४० हजार। सब सुनते थे, परन्तु वह सब आनेवाली पर्याय थी तो आयी है। आहाहा! और भाषा की निकलने का काल है तो भाषा निकलती है। प्रभु! ऐसी बात है। यह जड़ है। जड़ क्रमबद्ध अपने परिणामों से उत्पन्न होता है। आहाहा! यह बात बैठे...

मुमुक्षु : निश्चय से तो ऐसा है, व्यवहार से...

पूज्य गुरुदेवश्री : निश्चय से अर्थात् यथार्थ जैसी वस्तु की स्थिति है, ऐसा यह है। इससे विपरीत मानना, वह दृष्टि विपरीत है। आहाहा! ऐसा कि निश्चय से ऐसा है। तो व्यवहार से होता है या नहीं? स्पष्टीकरण कराते हैं। आहाहा! यहाँ तो कहते हैं कि श्रीमद् ने एक बार कहा... श्रीमद् राजचन्द्र। तिनका के टुकड़ा करना, यह भी आत्मा में सामर्थ्य नहीं है। एक तिनका—तृण। तिनके के दो टुकड़े करना, ये आत्मा की शक्ति नहीं। तो टुकड़े की पर्याय क्रमबद्ध में होनेवाली है तो होती है। आहाहा!

मुमुक्षु : ....

पूज्य गुरुदेवश्री : पुरुषार्थ तो अज्ञान का करे। माने कि मैं खेत करता हूँ, बैल को जोतता हूँ, बैल को चलाता हूँ। ये सब अभिमान मिथ्यात्व अभिमान है। आहाहा!

यह कहते हैं, इसी प्रकार अर्थात् जीव की पेठे—जीव की जैसे, **अजीव भी क्रमबद्ध अपने परिणामों से...** आहाहा! 'परिणामों से' क्यों कहा? क्योंकि अनन्त परिणाम हैं न? प्रत्येक परमाणु में अनन्त गुण हैं, तो एक समय में अनन्त पर्याय उत्पन्न होती है। एक परमाणु में एक समय में अनन्त पर्याय (होती है)। क्योंकि अनन्त गुण हैं न? तो उसकी अनन्त पर्याय क्रमबद्ध में—क्रमसर में आनेवाली है, वह आयी है। आहाहा! ऐसा काम। निश्चय से ऐसे हैं, परन्तु व्यवहार से कर सकता है न? ऐसे कहते हैं। व्यवहार से बोलने में आता है। उसने कहा कि यह शहर मेरा। समझ में आया? गाँव मेरा, राजकोट मेरा। सरदार शहर... सरदार शहर नहीं, कौन सा गाँव? सहारनपुर के हम रहनेवाले। सहारनपुर दूसरी चीज़ है, तुम रहनेवाले दूसरी चीज हो। सहारनपुर में रहनेवाले। सहारनपुर दूसरी चीज़ है, तुम रहनेवाले दूसरी चीज़ हो। सहारनपुर में रहनेवाले तुम हो? तुम तो आत्मा में रहनेवाले हो। राग में रहनेवाले भी नहीं, तो शहर में रहनेवाले (कहाँ)? आहाहा! बहुत अन्तर है।

अजीव भी क्रमबद्ध अपने परिणामों से उत्पन्न होता हुआ... आहाहा! पानी उष्ण होता है, अग्नि के निमित्त से, तो कहते हैं कि उष्ण होने के क्रम में पानी में उष्ण होने का पर्याय का काल था तो उष्ण हुआ, अग्नि से नहीं। आहाहा! समझ में आया? यह तो दृष्टान्त है। सिद्धान्त तो यह है कि प्रत्येक अजीव पदार्थ में अपने स्वकाल में क्रमसर में आनेवाले परिणाम से वह परिणाम होता है। आनेवाला है और होनेवाला है, स्वकाल है। आहाहा! वास्तव में तो जो भी परिणाम (होता है) परमाणु में और अजीव में, वह षट्कारक से परिणमन होता है। वह परमाणु का परिणाम भी...

पंचास्तिकाय ६२ गाथा है। पंचास्तिकाय। उसमें, जीव और कर्म—दोनों (के परिणाम) अपने परिणाम से हुए हैं, ऐसा पाठ है। ६२ गाथा, पंचास्तिकाय। वह चर्चा हुई थी वर्णीजी के साथ विकार अपने से होता है, पर से नहीं। यहाँ तो अभी निर्मल पर्याय की बात चलती है। निर्मल पर्याय भी अपने से क्रमसर होनेवाली है, तब होती है। उसका अर्थ, धर्म की निर्मल पर्याय का आश्रय द्रव्य (कहना), यह व्यवहार है। तो द्रव्य पर दृष्टि जायेगी—पर्याय अपने द्रव्य की तरफ झुकेगी... आहाहा! पर्याय मुख बदलेगी पर्याय का मुख राग, पुण्य और दया-दान और विकल्प पर है, वह पर्याय मुख

बदलेगी, अपने द्रव्य की ओर मुख बदलेगी, तब उसको क्रमबद्ध में सम्यग्दर्शन और धर्म होता है।

मुमुक्षु : मुख कैसे बदलना है?

पूज्य गुरुदेवश्री : यह है, उसको ऐसे करना है। मुख ऐसा है तो ऐसा कर डालना। समझ में आया?

कोई भी पर का कर सके ऐसा हो तो, ये ऐसा है, (उसे) ऐसा कर दो। आहा! ऐसे था, ऐसे कर दो। ऐसे नहीं होती। समझ में आया? ऐसा है... आहाहा! बात बहुत सूक्ष्म है, बापू! भगवान सर्वज्ञ परमात्मा... अनन्त द्रव्य जैसे हैं... अनन्त-अनन्तपने कब रहेंगे? अनन्त में एक द्रव्य की पर्याय का दूसरा कर्ता न हो तो अनन्त-अनन्तपने रहेंगे। जो दूसरा द्रव्य दूसरे की पर्याय का कर्ता हो तो इस पर्याय बिना का वह द्रव्य रहा। पर्याय बिना का द्रव्य रहता नहीं। एक (द्रव्य) पर्याय बिना रहा, दूसरा दूसरे का कर्ता हो तो वह पर्याय बिना का द्रव्य रहा। पर्याय बिना का द्रव्य रहे तो द्रव्य का भी नाश होता है। आहाहा! समझ में आया? सेठ! ऐसी सूक्ष्म बात है। सेठ इतने भाग्यशाली कि शिविर में आते हैं, दुनिया से अलग जाति है।

यहाँ तो यह कहते हैं कि कोई भी रजकण या कोई भी परमाणु का स्कन्ध... ये स्कन्ध है, उसमें जो परमाणु है, ये परमाणु भी क्रमसर अपनी पर्याय से उत्पन्न होता है। ये स्कन्ध में आया है तो ऐसी पर्याय हुई, ऐसा नहीं। यह परमाणु की रक्त की... यह रक्त है न? लोही को क्या कहते हैं? खून। उसकी पर्याय हुई न, तो परमाणु यहाँ आया तो खून की पर्याय हुई ऐसा है नहीं। यह परमाणु की खून की पर्याय होने की योग्यता से क्रमबद्ध आनेवाली थी तो आयी है। आहाहा! प्रभु! तुम तो ज्ञाता-दृष्ट हो न! जानने-देखनेवाला कर्ता हो जाये तो मिथ्यात्वपना आ जाता है। आहाहा! तुम तो... ज्ञाता-अकर्ता सिद्ध करना है न? यहाँ तो अकर्ता सिद्ध करना है। ऊपर है न। बताया था।

आत्मा का अकर्तृत्व दृष्टान्तपूर्वक कहते हैं... अमृतचन्द्राचार्य। अकर्तृत्व... वे (-अज्ञानी) ईश्वर को कर्ता कहते हैं, तो यहाँ तो कहते हैं कि द्रव्य पर्याय का कर्ता नहीं। ईश्वर कर्ता तो है नहीं किसी चीज़ का, परन्तु चीज की जो पर्याय है, उस पर्याय

का द्रव्य कर्ता नहीं। दूसरा द्रव्य तो नहीं कर्ता... आहाहा! कठिन बात है, भाई! यह तो परमात्मा जिनेश्वरदेव त्रिलोकनाथ ने सर्वज्ञस्वभाव में ऐसी पदार्थ की मर्यादा-स्थिति देखी है, वह बात बात है। दुनिया माने या न माने, उसको—सत्य को संख्या की आवश्यकता नहीं है लाखों माने तो सत्य कहलाये, थोड़े माने तो असत्य कहना—ऐसा है नहीं। वह कहते हैं। आहाहा!

यह कोडियुं... स्त्री भरत भरती है न? भरत कपड़े में। तो कहते हैं कि ये पर्याय स्त्री के आत्मा ने किया ऐसा हराम है। भरत भरती है न कपड़े में? यहाँ व्यवस्थित कर दिया... वे (अज्ञानी) कहते हैं कि स्त्री ने किया, इसकी इच्छा हुई तो हुआ। ये बिल्कुल झूठ है। आहाहा! भरत भी अपनी पर्याय में क्रमबद्ध में होनेवाली पर्याय से होता है। आहाहा! क्या कहे? तोरण करते हैं न? तोरण... तोरण... उसमें दाना... हाथी बनाते हैं। मोती को... वह रचने की पर्याय स्त्री ने की कि उसकी अँगुली से हुआ (ऐसा है नहीं)।

मुमुक्षु : ....से खून निकलता है....

पूज्य गुरुदेवश्री : यह नहीं, अपने से खून की पर्याय निकलती है। आहाहा! देखो! यह अँगुली है न? यह अँगुली उसको अडी (-छुई) ही नहीं। ऐसे खड्डा हुआ, ये खड्डे की पर्याय क्रमसर परमाणु में होने(वाली) हुई है, उँगली से नहीं हुई। आहाहा! समझ में आया? यह बात... परन्तु संयोग से देखते हैं, उसकी पर्याय को देखे तो... अँगुली दूसरी चीज़ है और वह हुआ दूसरी चीज़ है। यह संयोग से देखते हैं, परन्तु उसकी पर्याय उसमें (अपने में) उत्पन्न हुई, उस दृष्टि से तो देखते नहीं। आहाहा! सूक्ष्म बात है, भाई! अभी तो गड़बड़ बहुत हो गयी है।

पुस्तक बनाना, वह भी (परमाणु की) अपनी पर्याय से होता है। पुस्तक हमने बनायी... आहाहा! आचार्य महाराज तो कहते हैं, यह टीका... हमने टीका बनायी, ऐसे मोह से न नाचो। हम तो ज्ञाता(-दृष्टा) हमारे स्वरूप में हैं। हमारे स्वरूप से बाहर निकलकर ये टीका की रचना हुई, (ऐसा है नहीं) और विकल्प आया है तो टीका की रचना हुई, ऐसा भी नहीं। विकल्प आया है तो विकल्प मेरा कर्तव्य है, यह भी नहीं। आहाहा! मैं तो ज्ञाता (हूँ)। अकर्ता सिद्ध करना है न? पर का तो कर्ता नहीं, परन्तु राग

का भी कर्ता आत्मा नहीं। दया-दान-व्रतादि का विकल्प आता है, परन्तु आत्मा कर्ता है, ऐसा नहीं। क्योंकि आत्मा पवित्र पिण्ड प्रभु है, यह विकार को क्यों करे? चक्रवर्ती राजा को मकान की धूल साफ करने को कहना कि चक्रवर्ती! धूल निकाल दे। इसी तरह भगवान आत्मा अनन्त पवित्र गुण का पिण्ड है, उसको दया-दान विकल्प का कर्ता बनाना, यह चक्रवर्ती को धूल निकालने को (कहने जैसी) बात है। आहाहा! यह दृष्टान्त आता है शास्त्र में। शास्त्र में सब भरा है। दिगम्बर शास्त्रों में दृष्टान्त और न्याय सब भरा है। जहाँ-जहाँ जैसे चाहिए, वहाँ-वहाँ सब भरा है।

क्रमबद्ध अपने परिणामों से उत्पन्न होता हुआ... देखो! **उत्पन्न होता हुआ अजीव ही है...** उस पर्याय को अजीव कहा। अजीव की पर्याय को अजीव कहा, जीव की पर्याय को जीव कहा।—ऐसा अभी लेना है। नहीं तो जीवद्रव्य है, यह पर्याय में आता नहीं, ऐसे अजीवद्रव्य है, वह पर्याय में आता नहीं। परन्तु वह पर्याय उससे हुई है, ऐसे बताना है। पर से नहीं हुई और क्रम से आनेवाली (थी वह) हुई है—आयी है, यह बताकर (कहा कि) अजीव का परिणाम अजीव है। आहाहा! ऐसे क्यों कहा? अजीव का परिणाम अजीव है अर्थात् दूसरे साथ में जीव हो तो उससे हुआ ऐसा है नहीं। यह इनकार करते हैं, देखो! **अजीव ही है, जीव नहीं...** है? 'जीव नहीं' ऐसा क्यों कहा? कि जीव संयोग में हो, तो उससे वह पर्याय जड़ की हुई है, ऐसा तीन काल में नहीं। आहाहा!

यह बात... पश्चात् सोनगढ़ का एकान्त है... एकान्त है, ऐसा लोग कहते हैं। कहो, प्रभु! भगवान कहते हैं (या सोनगढ़ कहता है?) किसकी बात है यह? आहाहा! तीन लोक के नाथ तीर्थंकरदेव सीमन्धर भगवान के श्रीमुख से निकली हुई वाणी है। यह कुन्दकुन्दाचार्य ने सुनी है और यहाँ आकर ये शास्त्र बनाया। आहाहा!

मुमुक्षु : आप उस समय थे?

पूज्य गुरुदेवश्री : तभी वहाँ थे। सुनने को गये थे। यह बात इतनी... यह तो भगवान कुन्दकुन्दाचार्य की बात है। आहाहा!

यहाँ कहते हैं, **अजीव ही है...** ऐसा लिया। एकान्त नहीं है न? ऐसे कहते हैं कि

कथंचित् अजीवपर्याय अजीव से हुई, कथंचित् जीव से हुई—ऐसे अनेकान्त कहो। यह अनेकान्त है नहीं, प्रभु! यह तो एकान्त है। यह कहते हैं कि अजीव की अपनी पर्याय से अजीव उत्पन्न हुआ, वह अजीव ही है... अजीव ही है... आहाहा! यह होंठ हिलते हैं तो अजीव की पर्याय अजीव ही है, जीव नहीं। ऐसे क्यों कहा? अन्दर जीव है तो उससे होंठ हिला है, ऐसा नहीं, इसलिए जीव नहीं। आहाहा! इतना अभिमान छोड़ना.... आहाहा!

मुमुक्षु : मुर्दा क्यों बोलता नहीं?

पूज्य गुरुदेवश्री : मुर्दा बोलता...? मुर्दा चलता भी है। सुना है?

रात को... हमको तो नजर पड़े न। हमारे बड़े भाई थे। वह ५७ के वर्ष में गुजर गये। बड़े भाई थे, बहुत सुन्दर थे, बहुत होशियार थे। मुम्बई का पानी लग गया था। ५७, संवत् १९५७। तब हमारी उम्र ११ वर्ष की थी। ११ वर्ष की। ४६ में जन्म है। रात को वह गुजर गये, हमने देखा था। रात्रि को उसमें सुलाये... वो कोश... कोश समझते हो? लोहे की कोश होती है न? क्या कहते हैं? वह यह लोहे की कोश नहीं होती? ये रखी छाती पर। क्योंकि मुर्दा खड़ा न हो जाये। मुर्दा भी खड़ा हो जाता है। यह मुर्दा भी... पर ऐसा होनेवाला हो तब... कोश... कोश को क्या कहते हैं? लोहे की होती है न लम्बी? खोदने की... हमने देखा है।

५७ के वर्ष। हम तो छोटी उम्र के थे। हमारी माताजी कहे, यहाँ से निकल जाओ। मामा के घर जाओ। मामा गृहस्थ थे, सब बहुत पैसेवाले थे। मामा थे पैसेवाला। कहा, यहाँ से चले जाओ। तुम नहीं देख सकते। यहाँ सोना नहीं। भाई गुजर गया है। मुर्दा रखा है तो यहाँ सोना नहीं। यह ५७ की बात है। कितने वर्ष हुए? ७८ वर्ष पहले की बात है। यह मुर्दा को रखते हैं ऐसा। बाकी तो मुर्दे की पर्याय ऐसी खड़ी होने की नहीं थी तो बाह्य निमित्त... परन्तु होने की थी और रखा तो नहीं हुआ, ऐसा भी नहीं।

यह हमने देखा है। ११ वर्ष की उम्र ५७ में। छप्पनिया का दुष्काल था न! ५६ में बड़ा अकाल (पड़ा) था। ५६ में बरसात नहीं थी। हमारी तो छोटी उम्र थी १० वर्ष की। बड़ा अकाल... बहुत दुष्काल... ऐसा दुष्काल कि हम लड़के नदी के पार गये, नदी को

देखने। एक ग्वाला खड़ा था। ग्वाला खड़ा था और गाय २५, ३०, ४०, ५० खड़ी थी। गायों की आँखों में आँसू... आँसू... ग्वाले को पूछा... भाई! चार-पाँच दिन से घास का एक तृण भी नहीं मिला गाय को। एक तिनका नहीं। (संवत्) ५६ के वर्ष में... पाँच इंच बरसात आयी थी पहले। बस, फिर नहीं आयी। ५६ की बात है। ग्वाला खड़ा था। भरवाड समझते हो? गायों का ग्वाला। ग्वाले की आँखों में आँसू। अरे! यह गाय... ३०-४० गाय। चार-पाँच दिन से एक तिनका नहीं मिला। कहाँ से लावे? घास ही नहीं उगी।

अभी भी ऐसा सुना है। (बरसात) खिंच गया न एक महीना। अषाढ़ शुक्ल तीन तक ११ इंच आ गयी है। अभी नहीं आयी। घास बिना बारह-चौदह पशु मर गये। थोड़ी-थोड़ी घास उगी है। खोदे तो खा सके। खोदने की शक्ति न हो, मर गये। पर इस समय में यह पर्याय होने की थी, इससे होती है। आहाहा! घास न मिला, इसलिए देह छूट गया, ऐसा है नहीं। देह की पर्याय छूटने की थी और देह में आत्मा रहा तो आयुष्य के कारण से रहा—यह भी है नहीं। आयुष्य जड़ है और भगवान आत्मा चैतन्य है। तो जड़ से आत्मा रह सके अन्दर में, ऐसा है नहीं। अपनी पर्याय की योग्यता से क्रमसर में शरीर में रहने की योग्यता है, इतने साल रहते हैं। जब योग्यता छूट जाती है, तब छूटकर स्वर्ग में चले जाते हैं। धर्मीजीव की (बात है)। समझ में आया?

आचार्य ने दृष्टान्त दिया है। मनुष्य में से स्वर्ग में (जाता है), यह दृष्टान्त अपना लिया है। क्योंकि आचार्य देह छोड़कर स्वर्ग में जानेवाले हैं। चार गति का दृष्टान्त है पंचास्तिकाय में, वहाँ यह लिया है। मनुष्य से स्वर्ग और स्वर्ग से फिर मनुष्य होकर... कुन्दकुन्दाचार्य आदि कितने सन्त तो केवलज्ञान पाकर मोक्ष जानेवाले हैं। ऐसी स्थिति है। यह मनुष्य का दृष्टान्त ऐसा लिया है। मनुष्य मरकर नरक या तिर्यंच में जाते हैं, ऐसा नहीं लिया। मनुष्य मरकर स्वर्ग में जाते हैं, ऐसा लिया। क्योंकि अपनी बात की है। अपने क्रम से देह छूट जायेगा तो हमें क्रम से स्वर्ग की गति मिलेगी। केवलज्ञान है नहीं, पूर्ण प्राप्ति है नहीं तो देह तो मिलेगा, परन्तु यह जड़ के कारण से जड़ संयोग मिलेगा। अपनी योग्यता के कारण से वहाँ स्वर्ग में रहते हैं। श्रेणिक राजा भी अभी नरक में भी हैं... श्रेणिक राजा नरक में हैं नहीं, वे अपनी पर्याय में और गुण में हैं। आहाहा!

पर को कभी छुआ ही नहीं, तो पर में रहे, ऐसा कहाँ है ? बहुत कठिन... कठिन... भाई ! समझ में आया ? एक ने तो प्रश्न किया था कि श्रेणिक राजा मरकर नरक में गये। देखो ! नरकगति का उदय आया तो उन्हें जाना पड़ा। नरकगति बाँधी थी न पहली ? मुनि की असातना की थी। नरक का आयुष्य बँध गया। बड़ा आयुष्य बँध गया था। पश्चात् मुनि मिले और मुनि के पास समकित पाया। यह बहुत (लम्बी) स्थिति बँधी थी, यह तोड़कर ८४००० वर्ष की रह गयी। ८४००० वर्ष है। अभी भी (नरक में) हैं। पर अपनी पर्याय की योग्यता से (है)। गति का उदय है, उस कारण से वहाँ गये हैं, ऐसा है नहीं। आहाहा ! अनुपूर्वी भी झूठी है। नामकर्म में ९३ प्रकृति में एक अनुपूर्वी प्रकृति है। ये अनुपूर्वी प्रकृति क्या है ? कि एक गति में से दूसरी गति में ले जाना। ऐसे कहते हैं, ये सब निमित्त से कथन है। आहाहा !

ये बैल है न ? नाथ, बैल को नाक में नाथ डालते हैं, (फिर) खींचते हैं। वैसे आनुपूर्वी खींचकर ले जाते हैं, ऐसा लेख है। यह तो आनुपूर्वी प्रकृति है, ऐसा निमित्त का ज्ञान कराने को (कथन) है। बाकी अपनी पर्याय की योग्यता से कर्म... है तो उस प्रकार से स्वर्ग में जाते हैं, नरक में जाते हैं। आहाहा ! तो **अपने परिणामों से उत्पन्न होता हुआ अजीव ही है, जीव नहीं...** यह अनेकान्त है। जीव से भी हो और अजीव से भी हो तो अनेकान्त (कहलाये)—यह अनेकान्त नहीं। आहाहा ! कथंचित् अपनी पर्याय अपने से, कथंचित् पर से—ऐसा कहो तो अनेकान्त सिद्ध होता है—ऐसा है नहीं। **जीव नहीं...** जीव की पर्याय उसको (अजीव) उत्पन्न कर सके, ऐसा बिल्कुल है नहीं। क्यों ?

अब दृष्टान्त देते हैं। **जैसे (कंकण आदि परिणामों से उत्पन्न होनेवाले ऐसे) सुवर्ण...** सोना... सोना... सुवर्ण... **कंकण आदि परिणामों से...** कंकण, कड़ा, अँगूठी इत्यादि। **परिणामों के साथ तादात्म्य है...** आहाहा ! सोना जो जेवररूप हुआ, उस जेवर (रूप) परिणाम से सोना तादात्म्य है। जैसे उष्णता के साथ अग्नि तादात्म्य है, ऐसे ज्ञान के साथ आत्मा तादात्म्य है—तत्स्वरूप है, ऐसे सुवर्ण कंकण (आदि) अपनी पर्याय से तादात्म्य है। पर से हुआ ही नहीं। सोने में से कंकण हुआ, वह स्वर्णकार से हुआ नहीं। आहाहा ! क्योंकि उसके परिणामों से तादात्म्य है। इन परिणामों से सोना उत्पन्न हुआ है।

जेवर की अवस्था सोने से उत्पन्न हुई है; सोनी से नहीं, हथौड़ी से नहीं, नीचे ऐरण से नहीं। ऐसी बातें... कठिन लगे लोगों को। पूरे दिन ऐसा यह करते हैं, यह करते हैं व्यापार-धन्धा। कौन करता है ? बापू! सब संयोग से दिखता है। बाकी संयोगी पर्याय तो उसके कारण से होती है। तुम मानते हो कि हमारे से ये हुई, वह तो मिथ्यात्व का पोषण है। मिथ्यात्व संसार है, यह मिथ्यात्व ही आस्रव और संसार है। यह अहंकार निकालना (और) भेदज्ञान करना, वह अलौकिक बात है।

जड़ की पर्याय मेरे से नहीं और मेरी पर्याय जड़ से नहीं। आहाहा! ऐसे भेद करना... यहाँ कहा, **सुवर्ण का कंकण आदि परिणामों के साथ तादात्म्य है।** सोने में से जो जेवर होता है, ये जेवर परिणाम हैं। परिणाम के साथ सुवर्ण तादात्म्य है। परिणाम के साथ स्वर्णकार तादात्म्य है ? इस जेवर के साथ ऐरण तादात्म्य है ? इन परिणाम के साथ हथौड़ी तादात्म्य है ? आहाहा! जेवर उत्पन्न हुआ है, वह हथौड़ी से नहीं, ऐरण से नहीं, सोनी से नहीं। आहाहा! पूर्व पर्याय से भी नहीं। एक समय में जो पर्याय क्रमबद्ध उत्पन्न हुई है, वह पूर्व की पर्याय से भी नहीं और निश्चय से तो सुवर्ण के द्रव्य-गुण से भी नहीं। आहाहा!

तादात्म्य कहा है न ? **उसी प्रकार सर्व द्रव्यों का... सर्व द्रव्यों का अपने परिणामों के साथ तादात्म्य है।** जीव का परिणाम अपने आत्मा के साथ तादात्म्य है। अजीव का परिणाम अजीव से तादात्म्य है। एक परमाणु का परिणाम, वह परमाणु से तादात्म्य है। किसी भी चीज़ का परिणाम उस तत्त्व से ततरूप है, पर के साथ कोई सम्बन्ध है नहीं। आहाहा! शिक्षण शिविर में ऐसा अर्थ निकालते हैं। यह है, बापू! अरेरे! अनादि काल से ८४ लाख में... भाई! भूल गया ८४ लाख के अवतार को...

मुमुक्षु : दूसरा पूछे कि .... उससे यह होता है ?

पूज्य गुरुदेवश्री : ये दूसरा पूछे, न पूछे वह जाने। यहाँ तो वस्तुस्थिति यह है। यह दूसरा पूछे उसकी तो बात चलती है। यह हजारों लोगों में तो बात चलती है। पूछे (ऐसी) भाषा की पर्याय भी पूछनेवाले की क्रिया नहीं है। दरबार! ऐसी बात है, भाई! आहाहा! परम सत्य की बात है। आहाहा! **इस प्रकार जीव अपने परिणामों से उत्पन्न**

होता है, तथापि उसका अजीव के साथ कार्यकारणभाव सिद्ध नहीं होता... क्या कहते हैं? कोई कहे कि जीव अपने परिणामों से तो उत्पन्न होता है न? इतना तो कारण और कार्य करता है न? जीव अपने परिणाम का कार्य तो करता है न? अपने परिणाम का कार्य करे तो दूसरे के परिणाम भी करे। जैसे ग्वाला एक गाय को चराने ले जाये, तो दूसरा कहे, मेरी गाय भी ले जा। ऐसा आता है। ग्वाला है न? ग्वाला। एक गाय को ले जाये तो हमारी गाय को भी साथ में ले जा। हमारे कहाँ... ऐसे अजीव का परिणाम होता है? समझ में आया?

उसमें दूसरे द्रव्य का भी परिणाम कारणरूप हो तो उसमें क्या है? आहाहा! देखो, प्रभु! आत्मा में एक अकार्यकारण नाम का गुण है। क्या कहा? ४७ गुण हैं न? उसमें अकार्यकारण नाम का एक गुण है। १४वाँ है। आहाहा! ४७ में १४वाँ है, अकार्यकारण। आत्मा पर का कार्य नहीं और आत्मा राग और पर का कारण नहीं। आहाहा! पीछे है ४७ शक्ति। है या नहीं? ११२ पृष्ठ? श्लोक... श्लोक... (शक्ति) १३। १४ में आया। 'अन्य से नहीं किया जाता और अन्य को नहीं करता ऐसा एक द्रव्यस्वरूप अकारणकार्यशक्ति है।' है अन्दर? १४वीं है। १३ नम्बर बाद १४वीं। 'अन्य से नहीं किया जाता...' आहाहा! आत्मा में जड़ से कोई पर्याय नहीं की जाती और आत्मा में राग से सम्यग्दर्शन की पर्याय नहीं की जाती। आहाहा! 'अन्य से नहीं किया जाता...' 'अन्य से' में परद्रव्य और राग सब लेना। क्योंकि शक्ति का वर्णन है न? तो शक्ति के वर्णन में पर्याय निर्मल ही ली है। क्रम-अक्रम लिया है बाद में उसमें। अक्रम गुण और क्रम पर्याय, पर ये क्रम पर्याय निर्मल ली है। शक्ति का वर्णन है न? क्रम-अक्रम में यहाँ एक सी निर्मल पर्याय ही ली है। क्रम में राग... क्योंकि शक्ति है, वह वस्तु का गुण है। गुण को धरनेवाला द्रव्य है, वह पवित्र है और शक्ति भी पवित्र है, तो पवित्रता का परिणाम पवित्र है। समझ में आया?

राग का परिणाम आत्मा का है, ऐसा यहाँ है नहीं। शक्ति के वर्णन में शुरुआत में और बाद में दोनों जगह ऐसे लिया है। आहाहा! नय का अधिकार, प्रवचनसार में ४७नय का अधिकार लिया है, वहाँ लिया है ज्ञान कराने को। धर्मी जीव गणधर हैं, उनके भी

जरा विकल्प आया शास्त्र रचने का, तो उनका परिणमन है तो कर्ता कहने में आते हैं। आहाहा! परिणमन की अपेक्षा से कर्ता कहने में आता है। करनेयोग्य है, इसलिए कर्ता है, ऐसा है नहीं। आहाहा! समझ में आया? प्रवचनसार में ऐसा लिया है। कर्तानय है, भोक्तानय है। यहाँ यह नहीं लेना। यह यहाँ द्रव्यदृष्टि का विषय है। शक्ति का वर्णन है। समझ में आया? आहाहा!

मुमुक्षु : समयसार... या प्रवचनसार...?

पूज्य गुरुदेवश्री : दोनों, ज्ञान की प्रधानता से जाननेयोग्य चीज़ है, ऐसे मानना। दृष्टि की अपेक्षा से अपना परिणाम निर्मल ही होता है, ऐसा मानना।

आगे है, प्रश्न है आगे। 'जिसमें क्रम-अक्रम से प्रवर्तमान अनन्त धर्म हैं, ऐसा आत्मा ज्ञानमात्र किस प्रकार हैं?' उसमें है पहले यह बात। 'जिसमें क्रम-अक्रम से प्रवर्तमान अनन्त धर्म हैं,...' परन्तु यहाँ क्रम लेना निर्मल। यहाँ क्रम में मलिन न लेना। पहले शब्द है। पश्चात् भी है। यह बात तो बहुत बार सभा में १८ (बार) चल गया है। यह १९वीं बार चलता है। उत्तर है?

'प्रश्न : जिसने क्रम-अक्रम से प्रवर्तमान अनन्त धर्म हैं, ऐसा आत्मा ज्ञानमात्र कैसे है?' वह तो ज्ञानमात्र ही है। 'परस्पर भिन्न ऐसे अनन्त धर्मों के समुदायरूप से परिणमित एक ज्ञप्तिमात्र भावरूप से स्वयं ही है।' समझ में आया? यह अनन्त शक्ति में क्रम तो निर्मल लिया है। दूसरी (जगह) पंचास्तिकाय में ६२ गाथा में लिया, वहाँ विकार की पर्याय स्वतन्त्र षट्कारक से परिणमती—होती है, ऐसा लिया है। वहाँ तो ज्ञेय अधिकार है तो ज्ञेय को बताना है। यहाँ तो दृष्टिप्रधान शक्ति का वर्णन है। शक्ति पवित्र हैं, सब ओर पवित्र को धरनेवाला प्रभु भी पवित्र द्रव्य है। पवित्र से क्रम में अपवित्रता आती है, यह बात है नहीं। आती है अपवित्रता, परन्तु वह अपवित्रता का ज्ञान करती है, यह ज्ञानपर्याय अपनी है। आहाहा! समझ में आया?

यह तो कहा था न? भाव नाम का एक गुण है। भावगुण है। उसमें पीछे है। भाव है न? अन्दर शक्ति है। भावशक्ति है। देखो! ३३वीं। 'विद्यमान अवस्था युक्तपनेरूप भावशक्ति।' अमुक अवस्था जिसमें विद्यमान हो, वह भावशक्ति। ३३वीं शक्ति है। इस

भावशक्ति के कारण से उसकी पर्याय निर्मल ही होती है। निर्मल की बात है यहाँ। मैं करूँ तो पर्याय निर्मल हो, ऐसा विकल्प भी जहाँ नहीं। आहाहा! जहाँ द्रव्य पर दृष्टि कर पर्याय झुक गई, द्रव्य में भाव नाम का गुण है, उस कारण से अनन्त गुण की पर्याय निर्मल प्रगट होती ही है। आहाहा! समझ में आया? एक भाव(गुण) यह लिया। एक भाव(गुण) दूसरा है। आहाहा! आगे है।

३९। देखो! 'कर्ता-कर्म आदि कारकों के अनुसार जो क्रिया...' यह विकार है। विकार पर्याय में होता है, 'उससे रहित भवनमात्रमय होनेवाली भावशक्ति।' दो प्रकार की शक्ति है। एक भावशक्ति, अनन्त गुण में भावशक्ति पड़ी है तो प्रत्येक गुण की एक समय में होनेवाली पर्याय होगी, होगी और होगी। मैं करूँ तो होगी, ऐसा है नहीं। यह एक भावशक्ति। और एक भावशक्ति, विकार का परिणाम षट्कारक (रूप) परिणमन होता है, उससे रहित वह भावशक्ति का फल है। विशेष कहेंगे।

(**श्रोता :** प्रमाण वचन गुरुदेव!)